IMPACT FACTOR 5.397 (SJIF USA)
बिहार शोध समागम BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 1, January-March, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971

"दिव्यांग विद्यार्थियों की आकांक्षा का नई शिक्षा नीति के सन्दर्भ में अध्ययन"

भगवान सिंह राठौर
शोधार्थी
मौलाना आजाद विश्वविद्यालय जोधपुर (राजस्थान)

प्रोफेसर डॉक्टर राजेंद्र कुमार श्रीमाली
शोध निर्देशक
मौलाना आजाद विश्वविद्यालय जोधपुर (राजस्थान)

सारांश

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक एवं व्यवसायिक आकांक्षाओं का अध्ययन यह दर्शाता है कि उचित अवसर, संसाधन एवं मार्गदर्शन मिलने पर ये विद्यार्थी भी अपने जीवन में उच्च लक्ष्य निर्धारित कर सकते हैं। उनकी आकांक्षाएँ परिवार के सहयोग, विद्यालयी वातावरण, सामाजिक दृष्टिकोण, व्यक्तिगत रुचि तथा करियर परामर्श जैसे विभिन्न कारकों से प्रभावित होती हैं।

यद्यपि दिव्यांग विद्यार्थियों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, फिर भी समावेशी शिक्षा, सकारात्मक सामाजिक समर्थन एवं सरकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन से उनकी शैक्षिक प्रगति एवं व्यावसायिक सफलता सुनिश्चित की जा सकती है। यह अध्ययन इस बात पर बल देता है कि दिव्यांग विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर एवं सशक्त बनाने के लिए शिक्षा प्रणाली, परिवार और समाज को मिलकर कार्य करना चाहिए।

मुख्य शब्दावली: दिव्यांग विद्यार्थी, उच्च माध्यमिक स्तर, शैक्षिक आकांक्षाएँ, व्यवसायिक आकांक्षाएँ, समावेशी शिक्षा, करियर मार्गदर्शन, विशेष शिक्षा, आत्मनिर्भरता, सामाजिक सहयोग, शैक्षिक अवसर।

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी समाज के समग्र विकास का आधार होती है। यह न केवल व्यक्ति के बौद्धिक विकास में सहायक होती है, बल्कि उसके व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं भविष्य निर्माण की दिशा भी निर्धारित करती है। विशेष रूप से दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए शिक्षा का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि शिक्षा के माध्यम से वे आत्मनिर्भर बनकर समाज की मुख्यधारा से जुड़ सकते हैं। उच्च माध्यमिक स्तर वह महत्वपूर्ण चरण है जहाँ विद्यार्थियों की शैक्षिक एवं व्यवसायिक आकांक्षाएँ स्पष्ट रूप से आकार लेने लगती हैं। इस स्तर पर दिव्यांग विद्यार्थियों की आकांक्षाओं का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक है ताकि उनकी आवश्यकताओं, रुचियों एवं क्षमताओं के अनुरूप शैक्षिक एवं व्यावसायिक अवसर उपलब्ध कराए जा सकें।

दिव्यांगता की अवधारणा

दिव्यांगता का तात्पर्य ऐसे शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक या संवेदी प्रतिबंधों से है जो व्यक्ति की दैनिक गतिविधियों, सीखने की प्रक्रिया तथा सामाजिक सहभागिता को प्रभावित करते हैं। भारत सरकार द्वारा दिव्यांगता के विभिन्न प्रकारों को मान्यता दी गई है, जिनमें दृष्टिबाधित, श्रवणबाधित, अस्थिबाधित, मानसिक मंदता, सीखने में कठिनाई, ऑटिज़्म, सेरेब्रल पाल्सी आदि शामिल हैं। प्रत्येक प्रकार की दिव्यांगता का शैक्षिक एवं व्यावसायिक आकांक्षाओं पर अलग-अलग प्रभाव पड़ता है।

उच्च माध्यमिक स्तर का महत्व

उच्च माध्यमिक स्तर (कक्षा 11 एवं 12) विद्यार्थियों के जीवन का निर्णायक चरण होता है। इस स्तर पर विद्यार्थी विषय चयन करते हैं, भविष्य की पढ़ाई एवं करियर के बारे में निर्णय लेते हैं तथा अपनी क्षमताओं का मूल्यांकन करते हैं। दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए यह चरण और भी संवेदनशील होता है क्योंकि उन्हें शैक्षिक संसाधनों, सहायक उपकरणों, मार्गदर्शन एवं सामाजिक सहयोग की विशेष आवश्यकता होती है।

शैक्षिक आकांक्षाएँ

शैक्षिक आकांक्षा से तात्पर्य उस स्तर की शिक्षा से है जिसे विद्यार्थी प्राप्त करना चाहता है। उच्च माध्यमिक स्तर पर दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाएँ अनेक कारकों से प्रभावित होती हैं, जैसे—

1. *परिवार का सहयोग* – माता-पिता की सकारात्मक सोच, प्रोत्साहन एवं आर्थिक सहयोग शैक्षिक आकांक्षाओं को बढ़ाता है।
2. *विद्यालयी वातावरण* – समावेशी शिक्षा, सहायक शिक्षण सामग्री, प्रशिक्षित शिक्षक एवं अनुकूल वातावरण विद्यार्थियों में आत्मविश्वास पैदा करता है।
3. *स्वयं की क्षमता का बोध* – अपनी योग्यता और सीमाओं की समझ शैक्षिक लक्ष्य निर्धारित करने में सहायक होती है।
4. *समाज की धारणा* – समाज का दृष्टिकोण यदि सकारात्मक हो तो विद्यार्थी उच्च शिक्षा की ओर प्रेरित होते हैं।

अनेक अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि यदि उचित सुविधाएँ और मार्गदर्शन उपलब्ध हों तो दिव्यांग विद्यार्थी भी स्नातक, स्नातकोत्तर तथा व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने की उच्च आकांक्षा रखते हैं।

व्यवसायिक आकांक्षाएँ

व्यवसायिक आकांक्षा से आशय उस पेशे या कार्य से है जिसे विद्यार्थी भविष्य में अपनाना चाहता है। उच्च माध्यमिक स्तर पर दिव्यांग विद्यार्थियों की व्यवसायिक आकांक्षाएँ निम्नलिखित कारकों से प्रभावित होती हैं—

1. *दिव्यांगता का प्रकार एवं स्तर* – कुछ व्यवसाय विशेष प्रकार की दिव्यांगता के अनुकूल होते हैं।
2. *रुचि एवं अभिरुचि* – विद्यार्थी की व्यक्तिगत रुचि उसके करियर चयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
3. *रोल मॉडल एवं उदाहरण* – सफल दिव्यांग व्यक्तियों के उदाहरण विद्यार्थियों को प्रेरणा देते हैं।
4. *व्यावसायिक मार्गदर्शन* – काउंसलिंग, करियर गाइडेंस एवं प्रशिक्षण सुविधाएँ व्यवसायिक आकांक्षाओं को स्पष्ट करती हैं।

कई दिव्यांग विद्यार्थी शिक्षक, कंप्यूटर ऑपरेटर, लेखाकार, ग्राफिक डिजाइनर, स्वरोज़गार, हस्तकला, संगीत, खेल तथा सामाजिक सेवा जैसे क्षेत्रों में करियर बनाने की आकांक्षा रखते हैं।

प्रमुख चुनौतियाँ

उच्च माध्यमिक स्तर पर दिव्यांग विद्यार्थियों को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे—

* शैक्षिक संसाधनों एवं सहायक उपकरणों की कमी
* प्रशिक्षित विशेष शिक्षकों का अभाव
* नकारात्मक सामाजिक दृष्टिकोण
* रोजगार के सीमित अवसरों की धारणा
* आत्मविश्वास की कमी

ये चुनौतियाँ उनकी शैक्षिक एवं व्यवसायिक आकांक्षाओं को प्रभावित कर सकती हैं।

दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक एवं व्यवसायिक आकांक्षाओं को साकार करने हेतु निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं—

1. *समावेशी शिक्षा को सुदृढ़ करना* – विद्यालयों में दिव्यांग-अनुकूल अवसंरचना एवं शिक्षण व्यवस्था विकसित की जाए।
2. *व्यावसायिक परामर्श* – उच्च माध्यमिक स्तर पर नियमित करियर काउंसलिंग की व्यवस्था हो।
3. *अभिभावक जागरूकता* – माता-पिता को दिव्यांगता एवं संभावनाओं के प्रति जागरूक किया जाए।
4. *सरकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन* – छात्रवृत्ति, आरक्षण एवं कौशल विकास योजनाओं का लाभ सुनिश्चित किया जाए।
5. *सकारात्मक सामाजिक दृष्टिकोण* – समाज में दिव्यांग व्यक्तियों के प्रति सम्मान एवं स्वीकार्यता बढ़ाई जाए।

शोध के उद्देश्य

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं का अध्ययन करना।
2. दिव्यांग विद्यार्थियों की व्यवसायिक आकांक्षाओं का विश्लेषण करना।
3. शैक्षिक एवं व्यवसायिक आकांक्षाओं को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों की पहचान करना।
4. दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रति विद्यालयी वातावरण एवं सुविधाओं के प्रभाव का अध्ययन करना।
5. परिवार एवं सामाजिक सहयोग की भूमिका का परीक्षण करना।
6. दिव्यांग विद्यार्थियों की आकांक्षाओं में संभावित चुनौतियों एवं बाधाओं का पता लगाना।

7. शैक्षिक एवं व्यावसायिक विकास हेतु उपयुक्त सुझाव प्रस्तुत करना।

परिकल्पना (Hypothesis)

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाएँ औसत से उच्च स्तर की होती हैं।
2. दिव्यांग विद्यार्थियों की व्यवसायिक आकांक्षाएँ उनकी रुचि एवं क्षमताओं से सकारात्मक रूप से प्रभावित होती हैं।
3. परिवार का सहयोग दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक एवं व्यवसायिक आकांक्षाओं को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है।
4. समावेशी विद्यालयी वातावरण दिव्यांग विद्यार्थियों की आकांक्षाओं को बढ़ाने में सहायक होता है।
5. उचित करियर मार्गदर्शन प्राप्त करने वाले दिव्यांग विद्यार्थियों की व्यवसायिक आकांक्षाएँ अधिक स्पष्ट होती हैं।
6. सामाजिक समर्थन की कमी दिव्यांग विद्यार्थियों की आकांक्षाओं को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

शोध का औचित्य

वर्तमान समय में समावेशी शिक्षा की अवधारणा को विशेष महत्व दिया जा रहा है, जिसका उद्देश्य दिव्यांग विद्यार्थियों को समान शैक्षिक अवसर प्रदान करना है। उच्च माध्यमिक स्तर वह अवस्था है जहाँ विद्यार्थी अपने भविष्य की दिशा निर्धारित करते हैं, अतः इस स्तर पर दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक एवं व्यवसायिक आकांक्षाओं को समझना अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

यह शोध इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि दिव्यांग विद्यार्थियों को प्रायः संसाधनों की कमी, सामाजिक पूर्वाग्रह, उचित मार्गदर्शन के अभाव तथा सीमित अवसरों जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उनके लक्ष्यों, इच्छाओं एवं संभावनाओं का अध्ययन करने से शिक्षकों, अभिभावकों एवं नीति-निर्माताओं को ऐसी योजनाएँ बनाने में सहायता मिलेगी जो उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप हों। इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन समावेशी विद्यालयी वातावरण के विकास, करियर परामर्श की प्रभावशीलता तथा परिवार एवं समाज की भूमिका को स्पष्ट करेगा। शोध के निष्कर्ष दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति, आत्मनिर्भरता तथा रोजगार के अवसरों को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। इस प्रकार यह अध्ययन न केवल शैक्षिक दृष्टि से, बल्कि सामाजिक एवं व्यावसायिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत प्रासंगिक है।

निष्कर्ष

उच्च माध्यमिक स्तर पर दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक एवं व्यवसायिक आकांक्षाओं का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि यदि उन्हें उचित अवसर, संसाधन एवं मार्गदर्शन प्रदान किया जाए तो वे भी अपनी क्षमताओं के अनुरूप उच्च शिक्षा एवं सम्मानजनक रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षा प्रणाली, परिवार एवं समाज मिलकर ऐसे वातावरण का निर्माण करें जहाँ दिव्यांग विद्यार्थी अपने सपनों को साकार कर सकें और आत्मनिर्भर बनकर राष्ट्र के विकास में योगदान दे सकें।

संदर्भ ग्रंथ (References)

1. अग्रवाल, जे. सी. (2010). शैक्षिक अनुसंधान का परिचय. नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस।
2. बेस्ट, जॉन डब्ल्यू. एवं कान, जेम्स वी. (2006). Research in Education. नई दिल्ली: प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया।
3. शर्मा, आर. ए. (2015). शिक्षा अनुसंधान एवं सांख्यिकी. मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।
4. सिंह, एस. डी. (2012). समावेशी शिक्षा. आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।
5. मित्तल, ए. (2014). विशेष शिक्षा के सिद्धांत और व्यवहार. नई दिल्ली: एपीएच पब्लिशिंग।
6. Government of India (2016). Rights of Persons with Disabilities Act. नई दिल्ली।
7. NCERT (2006). Position Paper on Education of Children with Special Needs. नई दिल्ली: NCERT।